Appendix

परिशिष्ट

गीत संख्या १

काली रे काली काजलिये री रेखड़ी रे
हां जी रे, कालोड़ी कांठल में चमके बीजली
म्हांरी बरसाले री मूमल, हालै नी ये आलीजे रे देस ।
न्हायो मूमल माथड़यो रे मेट सूं
हां जी रे, कड़ियां तो राख्या मूमल केसड़ा
म्हारी जग मीठी मूमल, हालै नी ये आलीजे रे देस
सीसड़लो मूमल रो सरूप नारेल ज्यूं
हां जी रे केसड़ला माड़ेचीरा वासग-नाग ज्यूं
म्हांरी जग-वाली थे मूमल, हालै नी ये अमराणे रे देस
नाकड़लो मूमल रो खाण्डड़ये री धार ज्यूं
हां जी रे दांतड़ला उजल-दंती रा, दाड़म बीज ज्यूं
म्हारी हरियाली थे मूमल, हालै नी ये अमराणे रे देस ।
पेटड़लो मूमल रो पीपलिये रे पान ज्यूं
हां जी रे, हिवड़लो मूमल रो सांचे ढालियो
म्हांरी नाजुकड़ी मूमल, हालै नी ये रसीले रे देस ।
जांघड़ली मूमल री देवलिये रे थंभ ज्यूं
हां जी रे, साथलड़ी सपीठो पींडी पातली
म्हांजी माड़ेची मूमल, हालै नी ये आलीजे रे देस
जायी रे मूमल इये लोद्रवाणे रे देस में
हांजी रे माणी रे मूमल ने राणे महंद रे
म्हांजी जेसाणे री मूमल, हालै नी ये अमराणे रे देस

गीत संख्या २

सूरज जिसो ये उजास, मिरगानैणी जी राज
चांदे जिसी ये बाघ्रण उजली, जी म्हांरा राज
दूंधा जिसो ये उफाण, घणी ये प्यारी जी राज
दही ये सरीसी बाघ्रण, कटकटी, जी म्हांरा राज
मिसरी जिसो ये मिठास, मिरगानैणी जी राज
लूंग सरीसी प्यारी चरचरी, जी म्हांरा राज
सीस बण्यो ये नारेल, मिरगानैणी जी राज
चोटी तो कहिये वासग-नाग की सी, म्हांरा राज
नैण नींबू की जी फाड़, मिरगानैणी जी राज
अधरां तो लाली छा रही जी, म्हांरा राज
नाक सूवे की जी चूंच, मिरगानैणी जी राज
अधरां तो लाली ये छा रही, जी म्हांरा राज
दांत दाड़म का जो बीज, मिरगानैणी जी राज
जीमड़ल्यां तो अमरत वसै, जी म्हारा राज
पेट गवां की जी लोथ, मिरगानैणी जी राज
सूंडी तो कहिये रतन-कचोलियां जी म्हांरा राज
जांघ केले का जी थांभ मिरगानैणी जी राज
पींडी तो कहिये रतनालियां, जी म्हांरा राज
पांव पीपल का जी पान, मिरगानैणी जी राज
एड़ी तो कहियै सुरंग सुपारियां, जी म्हारा राज

गीत संख्या ३

सोना री सिर धरयो कलसड़ो, इंढूणी गज मोत्यां री ।
दिखणी चीर ओढ़ कर चाली, रिम झिम रिमझिम पणिहारी
घूंगटिया पर बाई जी री बीरो, बिचबिच नाजो पणिहारी ।
गल में सोवे नौसरहारो, बाजूबन्द री छिव न्यारी सोना०

माथा में थारै रखड़ी सोवे, नाकां में नथ बसरड़ी ।
सवा लाख रो घाबलियो, पगल्यां में बाजै पायलड़ी ।
सोना - - - -

गीत संख्या ४

रसिया फागण आयो ।
चार कूंट रो चोतरो हो रसियो, जिस पे कांतू सूत
तो सासू मांगै कूकड़ी, तै साजन मांगे रूप । रसिया ---
चरा चरी रो बेवड़ो हो रसिया, तो मघरी चालूं चाल रसिया ।।
सासूजी नरखें हो रसिया, तै साजन नरखें चाल हो रसिया ।।
सूरज थाने पूजती हो, तो भर भर मोत्यां थाल रसिया ।
छनके मोड़ा जो अगज्यो रसिया, मारा भँवर चढै दरबार ।
रसिया - - - - -

गीत संख्या ५

देखो अे सहेल्यां म्हारा सायबा रो रूप,
जांणू अेक निकस्यो चांदो चांद का जी राज ।
ऊंचो अे दीखै म्हारै मारूजी रो लिलाड़,
सिर पर सोवै पेचो केसरिया जी राज ।
माथा पर भंवारा जांणू काजल की सी रेख,
राता राता नैण नैण दोय सोवणा जी राज
तीखी तीखी नाक जांणू सुवा के री चांच
लम्बी लम्बी मूंछ कटार सी जी राज
होठ सुरंगा जांणू नारंगी री फांक,
दाड़म का सा बीज धोला दांतिया जी राज ।
लांबो डीगो पातलो सावलियो सिरदार,
बांको कोई राजा गढ़ कोटको जी राज ।

गीत संख्या ६

हे सोना नै सरीसी घण पीलरी, हो राज
राज ढोला राखो नी थांरे हिवड़े रे मांय
परभाते सिधावजो, आलीजा ओ, आज रैवोनी रात
रूपा नै सरीसी ओ थांरी घण ऊजली हो, राज
राज ढोला राखो नी थांरी मुठड़ी रे मांय । परभाते ----
मोत्यां ने सरीसी थां री घण निरमली, हो राज
राज ढोला, राखोनी थां रे कानां रे माय । परभाते ----
हीरां ने सरीसी थां री घण चिलकणी हो राज
राज ढोला, राखोनी थां रे कंठा रे मांय । परभाते ----
पानां नै सरीसी थां री घण रावणी, हो राज
राज ढोला, राखोनी थां रे मुखड़े रे मांय । परभाते ----
लूंगां ने सरीसी थां री घण चरचरी ओ राज
राज ढोला राखोनी थां रे मुखड़े रे मांय ।
परभाते सिधावजो, आलीजा ओ, आज रैवोनी रात ।

गीत संख्या ७

सरवर पानीड़ा नहीं जाऊंसा नजर ला जाय
म्हारी केसरिया साड़ी को पिया रंग उड़ जाय,
म्हारो पीलो रंग पिया फीको पड़ जाय ।
सरवर ----
म्हारी पतली कमर पिया मोचो पड़ जाय
म्हारी चुनड़िया रंग गरद मर जाय,
म्हारी सामली पाड़ोसन की काया बल जाये,
ऊं को जियो जल जाय ।
सरवर ----

गीत संख्या ८

पालो नहीं कांटू सा म्हारी गोरी सी हथेली
म्हारी गुदली सी हथेली में, छाला पड़्या जी मनवा मारूजी
थें तो आईल्या मंगराया, थें तो माईल्या मंगराया
मारवाड़ को खाकलो, मंगवादो, म्हारे बाजूबंद की लूम लावा दो
ढोला मारूजी ।

गीत संख्या ९

पीछोले री पाल माथे ठंडी वाले बाल, गोरी पाणी मती जाइजे रे
सांझ पड़ी दिन आथवो ने सूरज डूब्यो जाय
मैं थणे बरजी गोरड़ी, तू पाणी ने मत जाय
थारा मेंहदी रा हाथों छाला पड़ गया म्हारी गोरड़ी तूं पाणी मती जाइजे
ऊंचा-ऊंचा मेवाड़ी डुगरिया बोले मोर
काली पीली बादली इमें मेह पाणी रो जोर
नीला अम्बर में टिटोड़ी बोले, बोले म्हारी गोरड़ी तूं पाणी मती जाइजे
पाताल सरसी पातली घण पग धरता लुड़ जाय
संग सहेली साथ में नहीं थने देगड़ कौन ऊंचाय
थारी नरम कलाई बल खाजा म्हारी गोरड़ी तू पाणी -----

गीत संख्या १०

काली ए कालायण अमूटी ऐ,पणिहारी ए लो ।
छोटोडी छांटां रो बरसे मेह बालाजी,मरिया नाडा नाडिया ऐ ।प०
मरियो ऐ समंद तलाव वालाजी,पणिहारी ऐ लो ।
किणजी खुणाया नाडा नाडिया ऐ,पणिहारी ऐ लो ।
आज धराऊ धूंघलो ऐ, पणिहारी ऐ लो ।
सुसरेजी खुणाया नाडा नाडिया ऐ, पणिहारी ऐ लो ।
पिवजी खुणाया भीम तलाव, पणिहारी ऐ लो ।
सात सहेल्यां रे झूलरे, पणिहारी ऐ लो ।
पाणीडे ने चाली रे तलाव वालाजी, पणिहारी ऐ लो ।
घड़ो न डूबे ताल में ऐ, पणिहारी ऐ लो ।

ईढोंणी तिर तिर जाय वालाजी, पणिहारी रे लो ।
सातूं रे सहेल्यां पाणी भर चाली, पणिहारी रे लो ।
पणिहारी रही रे तलाव वाला जो, पणिहारी रे लो ।
वैवते ओटीड़े ने हेलो मारियो रे, लंजा ओठीडा रे लो ।
घड़ियो अखुणावतो जाय वालाजो, पणिहारी रे लो ।
ओरां रे काजल टीकियां रे, थारोड़ा है फीका नेण वाला जो,
ओरां रे, ओढण चूंदडी, पणिहारी रे लो ।
थारोडो मेलो वेसवाला जो,ओरां रा पिवजी घर बसे रे,लंजा ओठीड़ा रे लो ।
म्हांरोडा बसै परदेसवाला जो,के है रे सासू थारे सावकी रे,पणिहारी रे लो ।
के थारो पीवरियो परदेस वाला जो,नही है सासू म्हांरे सावकी रे,लंजा ओ०।
नही म्हांरो पीवरियो परदेस वाला जो,घड़ो तो पटकदै नी ताल में रे,प० ।
चालै नी ओठीड़े री लार वाला जो,बालूं तो फालूं थारी जीमड़ी रे,लंजा ओ०।
डसे तने कालो नाग वाला जो,चालै तो घडायदूं तनें वाडलो रे, प० ।
चालै तो नवसर हार वाला जो,अहड़ा तो वाड़लिया म्हांरे घर घणा रे लंजा ओ०।
खूंट्यां टक्या नवसर हार वाला जो,हाले तो चिरादूं थारे चूड़लो रे, प० ।
हाले तो दिखणी रो वीर वाला जो,चुड़लो चिरासी घण रो सायबो रे लंजा० ।
ओढ़णियो ओढासी म्हांरो वीर वाला जो,घडो तो भरने पाछी वली रे। प० ।
आयी फलसे री बार वाला जो,घडो तो पटकदूं ऊभी चौक में रे
म्हांरा सासूजी रे लो ।
वेगो रे घडियो उतराव वाला जो, किण थांने मोसो मारियो रे
म्हांरा बहूजी रे लो ।
कूण थांने दीनी है गाल वाला जो, एक ओठी म्हांने असो रे
म्हांरा सासूजी रे लो ।
पूछी म्हांरे मनड़े री वात वाला जो, देवरजी सरीसो डीघो पातलो रे
म्हांरा सासुजी रे लो ।
नणदल बाई सा रे उणिहार वाला जो, थे तो बहू भोला घणा हो
म्हांरा बहूजी रे लो ।
ओ तो थांरो ही भरतार वाला जो ।

गीत संख्या ११

सइयां मोरी ए आयोडो सुणीजै रे जलालो देस में
अन चमक्या रे प्यारे ज देस
सइयां मोरी एक आयोडो रालेसां रे जलाले रा वारणा
अन मोतीड़ां सूं लेवों रे वधाय
सइयां मोरी ए आयोड़ो सुणीजे जलालो तालरे
अन भी जोड़ी रे उड़े गुलाल
सइयां मोरी ए आयोड़ो सुणीजे जलालो वाग में
अन पकिया रे दाड़म - दाख
सइयां मोरी ए आयोड़ो सुणीजे जलालो पोल में
अन पोलिया रे पोल उघाड़
सइयां मोरी ए आयोड़ो सुणीजे जलालो आंगणो
अन दूधे बूठा मेह
सइयां मोरी ए बांकडली मूंछा रो जलालो मने मेल दे
अन हिवड़े सूं लेवां लगाय
सइयां मोरी एक पटिया पेचालो जलालो मने मेल दे
अन नेवड़ा सूं लेवां समझाय ।

गीत संख्या १२

सोने रो म्हे दिवलो घडास्यां रेसमवाट वटास्यां जी ।
प्यार वाट रो चोमख दीवो घी सूं म्हे पुरवास्यां जी ।
चांदी रे थाल में मेल म्हां रो दिवलो, रंगमहल में ले जास्यांजी ।
महीं महीं वाट, सुरंग म्हारो दिवलो, रंगमहल जग वास्यां जी ।

गीत संख्या १३

रंज रंज जिमास्यां जी काडका खूब करास्यां जी
नणदल बाई रे रावल जिमास्यां जी
महीनां सूं आयो म्हारो वरसां सूं आयो जी सायबो । रंज ----
म्हे बाल डुलाऊं फूलवां रो पंखो म्हारे हाथ में,
ऊंची मेड़ी रावली स रे चोमुख दिवला जोय,
ढोल्यो पलंग निवार को सो गयो सायबो
अजी म्हारे बाल डुलाऊं ---------- । रंज ----

गीत संख्या १४

उदियापुर से बीज मंगावो, मारूजी
नीमड़लो ब बांधो पाल तलाव की जी म्हांरा राज
माखणिया की पाल बंधावो मारूजी
नीमड़ली सींचाधो काचा दूध से, जी म्हांरा राज
ऊगी नीमड़ली घहर-घूमेर, मारूजी
फैली सैवां कोस में, जी म्हांका राज
अबके अलावे, मारूजी, सुसरैजी ने भेज
अबको चौमासो रंगमहल में, जी म्हांका राज
सुसरैजी रे जोधा जोधा पूत
वे क्यों जावे गढ़ की चाकरी, जी म्हांका राज
अबके अलावे, मारूजी, जेठजी ने भेज
अबके चौमासे, पना मारू, घर रहोजी म्हांका राज
जेठजी के तारादूती नार
नित ऊठ थां से लड़ पड़ै, जी म्हांका राज
अबके अलावे, पना मारू, देवरजी ने भेज
अबके चौमासे, प्यारा अठे ही रहो जी म्हांका राज
देवरिया के गोणे आयी नार
वा डरपै महलां में बैठी अकेली, जी म्हांका राज
अबके अलावे पना मारू, नणदाइजी ने भेल
अबके चौमासो, फूलां-सेज पै, जी म्हांका राज
नणदोइ जी के नारी नादान
बा डरपै महल में बैठी एकली, जी म्हांका राज
अबके अलावे, पनामारू, पाड़ौस्यां ने भेज
अबके चौमासो हरियल बाग में जी, म्हांका राज
पड़ौस्यां की आमी-सामी पोल
नित ऊठ थां से कलै करै जी म्हांका राज
इतरां में पनामारू, थे ही गंवार
नित ऊठ घुड़ला थे कसो,जी म्हांका राज
इतरां में, मरवण म्हे ही मे सपूत
नित ऊट रण में म्हें ही चढ़ा, जी म्हांका राज ।

गीत संख्या १५

म्हारे जोधपुर सूं चूंदडी मंगवादो मंदवा मारूजी म्हे पालो कोनी कांटूला
अगड़ी भी ले दो म्हारे, वगड़ी भी लादो म्हारे
दांता बिचली चूंप जड़ादो मंदवा मारूजी । म्हे पालो -----
अंगडी भी लादू थारे बगड़ी भी लादू थारे
जोधपुर सूं सोनी लवादू म्हारी मारूणी, पालो दोनूं काटा सा ।
आपरी बडोड़ी ने पीहर मेलो मंदवा मारूजी, म्हे पालो ------
म्हूं तो बडोड़ी ने पीहर मेलू म्हारी मारूणी । म्हे पालो दोनूं -----
म्हारा गेदस्या हांथा में छाला पडया मंदवा मारूजी, म्हे पालो -----
थारे जोधपुर सूं बैद बुलवा दूं म्हारी मारूड़ी, पालो दोनूं -----
म्हारे कोटा सूं गोठा मंगवादू म्हारी मारूणी, पालो दोनूं -----
म्हारे बूंदी सूं फूंदी मंगवादो जी म्हारा मारूजी, म्हे पालो -----
थारे बूंदी सूं फूंदी मंगवादूं म्हारी मारूणी, लो पालो दोनूं काटा सा ।

गीत संख्या १६

काले रंग चूंदडी लेदे रे बालमवा ।
काले रंग चूंदड़ी जब आछी लागे ।
माथे पे रखड़ी ले दे रे बालमवा ।। काले रंग -----
कानां में झालज सोवे रे बालमवा ।
काले रंग चूंदड़ी जब आछी लागे ।
हाथों में गजरा सोवे रे बालमवा ।। काले रंग -----
सिर पे सालूडा सोवे रे बालमवा ।। काले रंग -----
पावों में बिछिया सोवे रे बालमवा ।। काले रंग -----

गीत संख्या १७

आज तो रंगीली गणगौर छै केसरिया ढोला ।
माथा ने मेंमद ल्यावोजी हजारी ढोला,
रखड़ी रतन जड़ावजो केसरिया ढोला आज तो ।
मुखड़ा ने बेसर ल्यावजो केसरिया ढोला,
मलको बादीला थारी माज छै केसरिया ढोला आज तो ।
कानां में कुण्डल ल्यावजो हजारी ढोला,
झुरनी बादीला थारी माज छै केसरिया ढोला आज तो ।
(इसी प्रकार अन्य आभूषणों का वर्णन करते गीत आगे बढ़ता है।)

गीत संख्या १८

माथा ने भंवर घड़ाव ओ जी, रखड़ी रतन जड़ाय गोरी का सायबजी
या रत मानो जी गणगौर
काना ने फाल घड़ावजो जी फुटणा फोल दिवाय ।
मुखड़ा ने बेसर घड़ावजो जी मोती रा फेर गंड़ाय । गोरी रा ----
हिवड़ा ने हांस घड़ावजो जी मन्यो पाट पुवाय,
बहयां ने चुडलो चिराव जो जी गजरा रतन जड़ाय,
कडया ने पटोली सिवाव जो जी केसरया फेर दिवाय । घनरा -----
पगल्या ने पायल घड़ाव जो जी, घुमरा घमण दिवाय । गोरी रा----
आंगल्या ने बिछिया घड़ावजो जी अनवट रतन जडाय, गोरी रा ----
मानो छो तो आन लो जी पाछे आई आखातीज ।
थाको तो म्हाको जिवड़ो एक छे जी ज्यूं चकरी में रेशम डोर,
थांके साथ्यां के बैठणोजी, म्हांकी सहेल्या रो साथ । गोरी रा ----

गीत संख्या १९

लालर दे दो ओ नोखीला मारो जीव तरछे (ओ लालर ले दो)
रखड़ी बांधू तो मारे कालो डोरो आठी के,
एजी बिंदली बिना मारो जीव तरछे (लालर ले दो)
साडी ओढ़ू तो मारो मन नी भावे,
पीलिया बिना मारो मन तरछे । लालर ले दो -----
नथड़ी पेरूं तो मारे पास नहीं आवे,
ऊनी बेसर बिना मारो जीव तरछे । लालर ले दो ---
हंसली पेरूं तो मारे मन नी भावे,
एजी तमण्या बना मारो जीव तरछे । लालर ले दो -----

गीत संख्या २०

फूल गुलाब रो हूवती आलीजे रै पेच कुणगे पर रैती
तेल चंपेल रो हूवती मिजाजी रै बालां में रैती
रूमाल रेसम रो हूवती सारै दिन जेबड़ली में रैती
मूंदड़ी सोने री हूवती सारे दिन चिटू में रैती
मोचड़ी पगल्यां री हूवती आखै दिन पगल्यां में रैती ।

गीत संख्या २१

कुण मारी पिचकारी गोरी रा बदन पे कुण मारी पिचकारी
म्हारा मुखड़ा पर कुण मारी पिचकारी
चढता जोबन पर कुण मारी पिचकारी
माथा ने मेंमद हंघक बिराजे, तो रखड़ी री कब न्यारी जी
बाईसा रा बीरा, सासुजी रा जाया
तो साजन मारी पिचकारी । कुण मारी - - - - -

गीत संख्या २२

ननंद बाई म्हने बरजो मति म्हे तो बंसी वाला से खेलांगी फाग
बोई बंसीवाला ने वोई मुरली वाला वोई म्हारा जीव के आधार
नरबदा के रंग से भरी पिचकारी बंसीवाला से खेलेगा फाग
कायन के रंग बनाया ने कायन की पिचकारी
कच्ची कली के रंग बनायो कंचन की बनी पिचकारी
भरी पिचकारी राधा के माथे डाली तो भीग गई जी गुलसारी
कित्ता रे बरस के कुंवर कन्हैयो कित्ता रे बरसकी राधा प्यारी
बारा बरस के रे कुंवर कन्हैया तो भर राधा जोबन प्यारी ।
ननंद बाई म्हने - - - - -

गीत संख्या २३

गेल म्हारी छोड़ो, डगर म्हारी छोड़ो
श्याम भींग जावोगा नैनन में
नैनन में जो थारे मन में होली खेल की
श्याम म्हने लई चालो कुंजन में
श्याम म्हने लई चालो सकियन में ।
हिवड़ा में व्हारे हंस सो सो बे
अंग के व्हारे केसरिया बी सोबे
मरे सालू के कोर लाव
श्याम भींज जावांगा नैनन में यूं गेल म्हारी

गीत संख्या २४

साथीड़ा फागण बोले रे मीनो फागण रो
औरो तो दवों मारी दाय पड़े तो आज्ये रे
होली आला मीना में जरूर आज्ये रे मीनो फागण रो
सालूड़ो रंगाई ये भंवरजी थारी दाय पड़े तो आज्यो रें ।
थूं कवे लो मारूणी थारे फालरो गड़ाऊ
आई रे होली आई मीदणी वणाई देस्यूं रे
थारी साथणियों में खेलण मत जा कियो मानजा
कवे तो भंवरजी थाने रूमालियो रंगाई दू ।
आई रे होली आई बींद बणाई देस्यूं रे ।
थारा साथिड़ों में खेलण मत जावो भंवरजी कियो मान जा ।

गीत संख्या २५

भंवर म्हाने खेलण दो गणगोर म्हारी सैयां जोवे बाट
ओ भवर म्हाने खेलण दो गणगोर
के दिन री गणगोर थाके, जी थाने कतरा दिन रो चाव
दस दिन री गणगोर ओ भंवर जी म्हाने सोला दिन रो चाव
नही जावां दो सारी रात ओ सुन्दर
घड़ी दोय जावा दो भंवर
म्हाने घड़ी दोय जावा दो, जी म्हानी सासू सपूती राजोध,
म्हारी सैयां जोवे बाट ओ पनामाक
म्हारी आलीजा रो जलद सुभाव । भंवर म्हाने - - - -
म्हारी रात रिफावण दिन बतलावण, जावा नी दा सारी रात
म्हारी सैयां जोवे बाट, ओ भंवर म्हानें - - - - -

गीत संख्या २६

वन खंड में हिंडोलो मांडयो, रेसम री पट डोर ओ जी
राणी रेणादे हींडण बैठ्या धरती न फेले मार ओ जी
सुरजजी ललकारो दियो, ओ हींडो गियो गिरनार ओ जी, वनखंड ---
राणी रेणादे हींडण बैठ्या धरतीक न फेले मार ओ जी
चन्द्रमा ए ललकारो दियो ओ हींडो गियो गिरनार ओ जी, वनखंड ---

राणी सावत दे हींडण बैठ्या घरती न फेले भार ओ जी
दनाजी ए ललकारो दियो ओ हींडो गियो गिरनार ओ जी, वनखंड ----
राणी गवरां दे हींडण बैठ्या घरती न फेले भार ओ जी,
ईसर ए ललकारो दियो ओ हींडो गियो गिरनार ओ जी, वनखंड -----
राणी रूकमणी हींडण बैठ्या घरती न फेले भार ओ जी,
किसनजी ए ललकारो दियो ओ हींडो गियो गिरनार ओ जी,
वनखंड में हिंडोलो मांडयो रेसम री पट डोर ओ जी

गीत संख्या २७

मेंहदी वायी वायी वालूड़ा री रेत प्रेम रस मेंहदी राचणी
मेंहदी सींची सींची जल जमुनारे वीर, प्रेम०
मेंहदी उगी ऊगी पान दो पान, प्रेम०
मेंहदी अधी लोहे गुल क्यारी रे बीच, प्रेम०
मेंहदी चूंटी - चूंटी मजुकडीली नार, प्रेम०
मेंहदी सूखे - सूखे आंगनियेरे बीच, प्रेम०
मेंहदी पीली पीली चकली रे पाट, प्रेम०
मेंहदी छाणी - छाणी सालूडे री कोर, प्रेम०
मेंहदी भीजे भीजे रतन कचोले, प्रेम०
मेंहदी पीली पीली चकली रे पाट, प्रेम०
मेंहदी छाणी छाणी सालूड़े री कोर
मेंहदी भीजे भीजे रतन कचोले बीच, प्रेम०
मेंहदी मांड़ी मांड़ी बडोडी जेठानी बैठ, प्रेम०
मेंहदी निरखे मारी नणदल बाई रो वीर, प्रेम०
कुण मंडया ए सुवागण थारा हाथ,
रायया-रायया ए सुन्दर थारा हाथ, प्रेम०
थारो हाथ म्हारे हिवड़े अपर राख, प्रेम०
थारी मेंहदी पर वारे पन्ना जवाहर, प्रेम०

गीत संख्या २८

कुणी जी रो दीवलो ने कुणी जी री बाट ?
कुणी जी री राणियां घम घम घी भरै ?
वलजे म्हारा दिवला रे सारी रात
जलजे म्हारा दिवला रे सारी रात
थारी मंगल री बाट वलजें म्हारा दिवला सारी रात ।
कुणी सारो दिवलो, ने कुणी सा री बाट ?
कुणी सा री बाटड़ी जागेजी सारी रात ?
सुरंग म्हारी नणदल नणदोई री बांता ।
पियाजी रो हेत जलै जी सारी रांता ।।

गीत संख्या २९

हालो मेलां चालो मारा राज पिया प्यारी रा ढोला
हालो मेला चालो मारा राज ।
आपरे मेला बाई चाबवारी बीड़ी मारा राजजी
चंदा बदनी रा ढोला फालो दे दे हारी मारा राज
आपरे मेला कही बनक भरीजे मारा राज जी
मीठा बोली रा ढोला सोले सूरज जगा मारा राज
आपरो रीजाबो मारा राज जी पिया प्यारी रा ढोला
कला रो खेलाबो मारा राज
बोदवारो पेचो मारा राज साहिजादी रा ढोला
घूलां सन्दो मारो मारा राज
लाड़ीसरी साड़ी मारा राज पिया प्यारी रा ढोला
बी घाणारी बाड़ी मारा राज
प्यारी सारो आबा मारा राज छैद गालीया ढोला
बरछी रो मंगावो राजा राज

गीत संख्या ३०

सजने ढोलाजी सोले सणगार
रसवंती मैलां आयी रे मदछकिया थारी बोली प्यारी लागे सा
उमके जाकर रणबार साथण देखे ।
म्हारा घण हेतालु सरदार सलगत आहीं लागे सा

घेरा तो गोरी थारा लाल रे गुलाल
बालो देवादे पदमण प्यारी लागो सा
झंपे रे दीवो मैलां उजियार
मत खीचो साड़ी रो चीर प्यारा लागे सा
रस भेद न जाणूं रे अलबेला
दीवो देय बुझाय प्यारा लागो सा
पीली ने परमातां म्हारे जानो रे वार
वलतां सेरो रो शिकार प्यारा लागो सा

गीत संख्या ३१

थे दाड़म हूं दाख हंगामी ढोला
अेके ने बागां में दोनूं नीपजां जी म्हारा राज ।
थे मोती हूं लाल हंगामी ढोला
अेके ने नथड़ी में दोई पिरोइया जी म्हारा राज ।
थे खांडो हूं ढाल हंगामी ढोला
अेके ने रांसीलै दोय फेलिया जी म्हारा राज ।

गीत संख्या ३२

सुणो ओ भंवर म्हांने सपनो सो आयो जी राज ।
सुपने रो अरथ बतावो जी राज ।
कहो अे गोरी थांने किण विध आयो जी राज ।
सुपने रो अरथ बतावां जी राज ।
हंस सरोवर ढोला गाजत देख्यो जी राज
मान सरोवर जल भरयो जी राज ।
बागां मांयला चंपला म्हे फूलत देख्या जी राज
फुलड़ा बिणो दोय कांमणी जी राज ।
पोलां मांयला हसती म्हे घूमत देख्या जी राज
हरी हरी दूब घोड़ा चरे जी राज ।
आंगणिये रो चोक म्हे पूरत देख्यो जी राज
ऊपर कुंभ कलस धरयो जी राज ।
महलां मांयलो दिवलो म्हे जगतो देख्यो जी राज
दिवले री जोत सुहायी जी राज ।

हंस सरोवर गोरी पीर तुम्हारो जी राज
मान-सरोवर थांरो सासरो जी राज ।
बागां मांयला चंपला बीर तुम्हारा जी राज
फुलड़ा बिणे थांरी भावजां जी राज ।
पोलां मांयला हसती जेठ तुम्हारा जी राज
हरी हरी दूब सुवासणी जी राज ।
आंगणिये रो चौक कंवर थांरो जी राज
कुंम कलस थांरी कुल बहू जी राज ।
महलां मांयलो दिवलो कत थांरो जी राज
दिवले री जोत सायबणी जी राज ।

गीत संख्या ३३

इण सरवरिये री पाल हंगामी ओ ढोला रे
पीपलिया हो ढोला पीपलिया थोड़ा वडला चोगणा हो राज
वड़ला तो परा रे वढाय, हंगामी ओ ढोला रे
पीपलिये री छाया रे जाजम ढालसां हो राज
आप सिधाया परदेस, हंगामी ओ ढोला रे
थारी ओलूड़ी घणा ने भावती, हो राज
म्हे था ने पूछा बात, हंस हंस पूछा वात हंगामी ओ ढोला रे
भवर पटां में फाफी खेह घणी, हो राज
गया था वेलीड़ा री गोढ़ म्हां री सुंदर गोरी अे
भंवर पटो मे म्हारे फाफी खेह घणी हो राज
म्हे था ने पूछा वात हंस हंस पूछां वात म्हारी सुंदर गोरी अे
आंखडल्या रो सुरमो फीको क्यों पडयो, हो राज
चालो चालो नगीने रे देस म्हांरी सुन्दरी गोरी अे
थां रो पीवरियो म्हां रो सासरो हो राज
थे दाड़म हं ड़ाख, हंगामी ढोला रे
एकै ने ~~बाफा~~ बाग में निपज्या, हो राज
म्हे थांने पूछा वात, हंस हंस पूछा वात हंगामी ढोला रे
परदेशी बैठा था कांइ किया हो राज
दिन दिन लेखण हाथ अे

सांफडली पड्यां रोकड सारता, हो राज
म्हे था ने पूछा वात हंस हंस पूछा वात म्हारी सुन्दर गोरी अे
पीहरिये बैठा थां कांइ किया हो राज
दिन-दिन सखियां रे साथ
सांफडली पड्यां हो पडवे पोढती, हो राज ।

गीत संख्या ३४

पाणीड़े नै जातां गोरी रा सायबा
प्यारी घण रै कांकरड़ी कुण मारी म्हांरा राज
म्हें हंस मारी जी गोरी घण
थांरै कोठे सी लागी म्हारा राज
जी ईंडी के लागी गोरी रा साहिबा
प्यारी घण पै नींबूड़ा कुण बाया म्हारा राज
म्हे हंस बाया जी गोरी घण प्यारी
थांरै कोठेड़ै सी लागी म्हारा राज
बैयां के लागो गोरी रा सायबा
कतियां म्हारी राम उबारी म्हारा राज
जी महलां में जातां गोरी रा सायबा
प्यारी घण पै लाडूड़ा कुण राल्या म्हारा राज
म्हें हंस राल्या म्हारी गोरड़ी
प्यारी घण रे कोठेड़ै सी लागी म्हारा राज
जी घूंघट के लागी गोरी रा सायबा
बेसर म्हारी राम उवारी म्हारा राज
थारी तो घाली गोरी रा साहिबा
जंगल हिरणी होय जासूं म्हारा राज
थारी तो घाली गोरी रा साहिबा
जलमें माछली होय जासूं म्हारा राज
जे थे घण होसो जंगल हिरणी
पन्ना मारू असल शिकारी म्हारा राज
जे थे घण होसो जल री माछली
पन्ना मारू असल तरवाई म्हारा राज

थारी तो घाली गोरी रा साखिया
घोरां दूबलती हो जासूं म्हारा राज
जे घण होसों घोरां दूबड़ी
पन्ना मारू अल्ल बटोरो म्हारा राज
थारी तो घाली गोरी रा साखिया
मैं तो पीवरिये उठ जास्यां म्हारा राज
जे घण जासो थांरे बाप रै
पन्ना मारू लेयो लाग्या आसी म्हारा राज
थे घण खावो मोठ'र बाजरो
पन्ना मारू लाड जंवाई कहासी म्हारा राज

गीत संख्या ३५

म्हां सूं मत लड़ो म्हाकां भरतार
ऊंची हवेली काच की जी पैरा लागे चार
म्हारा नवल बना ।
हाथी सूं हाथी लड़े
कोई दरवाजा सूं कोट ।
गोरी सूं रसिया लड़े
कोई पड़े नरम की चोट ।
म्हाने परण पीयर मत मेलो जी, म्हाने ओ-लूड़ी थांकी आवोजी
कासी बरणी बारकी प्यारा, जी में खांउ खांउ मात
सब सुख म्हारा बाप के कोई पिव बिन रयो न जाय

गीत संख्या ३६

पति - अठी देखो नी जरा सूं अठी देखो नी,
मैं लायो चूंदड़ी जोधाणे री थे अठी देखो नी
पत्नी - आया क्यूं नी ओ थे बेगा आया क्यूं नी ओ
मैं जोवा बाट थारी काल सूं थे आया क्यूंनी ओ ।
फिरमिर-फिरमिर मेहूडो बरसे घटा घिरी घनघोर
मंदरी-मंदरी चले पवनड़ी वन में नाचे मोर
कोयलडी कूके बागां माय जी थे आया क्यूंनी ओ
थे तो पिवजी सैर पधास्या मने छोड गया लारे ।

सासूजी सूं खटपट हो गई रोती रई मैं बारें ।
ओ मैं तो जास्या मारे पियरिये अटे रेवा कोनी ओ
पति - सासूजी सू मैं समझाई दू मत हो तू बिराजी
म्यां बीबी बे राजी तो कांई करेला काजी
मारी रीसो बलतो मूंडो मनें चोखो लागेओ । अठी ---
हसली बोर रखड़ी गोरी अबकी थानै जडाय दूं
नयो पोमचो नई लाओ तो सासरिये मैं नई रेऊं
ओ मैं तो मानू सगली बात अबकी हंसदो नी ओ । अठी ---

गीत संख्या ३७

आई - आई सावणिया री तीज
गोरी ने मांडयो रूसणो जी म्हारा राज
प्यारी ने मांडयो रूसणो जी म्हाका राज ।
लाओ पिया रेशम, सोना की ल्यावो पाटली जी, म्हाका ---
रूपा की लाओ पाटली जी म्हाका राज
कहा से ल्यावां रेशम की डोर
कहा से ल्यावा पाटली जी म्हाका राज
कोटा से ल्यावो पाटली जी म्हाका ---
घाल्यो घाल्यो आम्बोलां की डाल
फूलो तो फूलां बाग में जी ।
फूलो तो डाल्यो चम्पा बाग में जी । म्हाका ----
हीडे हीडे घर की जी नार
हिंडावे मोही सायबा जी । म्हाका ----

गीत संख्या ३८

कांई रे जुआब करूं रसिया से ?
जुआब करूंजी व सवाल करूं ।
केसरिया रे मनमें जानों डंखजी
कांई रे जुआब करूं रसिया से ।
जी साहिबा खेलन गई गणगोर
अबोलो म्हां सें क्यूं लियोजी म्हारा राज ।

जी साहिबा छोटी ननंद थांकी बैन
बाईसा कर मानती जी, म्हारा राज
जी साहिबा बाने लगाई अती देर
किसूर म्हारो नाथ छै जी, म्हारा राज
अजी थे तो पूजो गणगौर,
अजी थे तो मांडो गणगौर
छैल दुपट्टा धो तो,
दुपट्टा री लैस दो तो
पीली पीली मोहरो धो तो पूजू गणगौर
अजी में तो मांडू गणगौर

गीत संख्या ३९

मुजरो मानलो नौखीला
म्हें तो पीहर चाली रे ।
आगे तो पग धरूं मंवरजी
पाछे पगल्या राखूं जी
था में उलझयो प्राण
पति ने फिर फिर झांकू रे ।
बादीला राजा फिर फिर झांकू रे । मुजरो ---
सासू सूती नणदल जागे
सोक करोखे झांके रे
थां में उलझयो प्राण
पति म्हें फिर-फिर झांकू रे । मुजरो ---

गीत संख्या ४०

मंवर म्हाने परण पीयर मति मेलो सा
सियाले री रैन में ही मारूजी
म्हारा तो पियरिया में लाड़ घणा घेरा
दूणा डोढा जतन कराऊंसा । सियाले ----
सियाले री रैन पांच सहेल्यां रे साथे
गोखां माय आपने खेलावांसा । सियाले -----
मट्टियां उकले छै मारू मदड़ो कढावां

बागां माय गोठ दिरावां सा । सियाले -----
रंगीला प्रीतम आपने असी नी चावे
परदेसा सियालो बितावो सा । सियाले ----
सी तो पड़े छै घणो जतन करावां
ओडा ओडा बोल्यूं बोल्यूं आवेसा । सियाले ----
ढोलिया री चौकी देसां आपने रिझावांसा
हांजी नाजी कर बतलावा सा । सियाले ----
आयो छै सियालो सायब नौकरी मत जावो
रंगीलो सियाले री रैन सा । सियाले -----

गीत संख्या ४१

ऊंटा रो लादबो छोड़ दो, मारूजी,
ले ल्यो कूवाळी चोथ ।
थे तो वण जाज्यो वारिया, मारूजी,
मैं पातलड़ी पणिहार ।
थे तो बणजाज्यो कीलिया, मारूजी,
मैं पातलड़ी घकियार ।
एकलड़ी मत छोड़ ज्यो, मारूजी,
रहुंगी मैं थारे साथ ।।

गीत संख्या ४२

साड महीने बिरखा लागी,बाजरियां री वाह,मारूजी म्हारै मातो लावै,वाह रे सांई वाह
सावण महीने बाजर लागो,नीनाणा री नाह,काचरियां री बेलां टालां,वाह रे सांई वाह ।
भादू महीने मूंगा होसी, तीवणिया री ताह,बाजरियां री रोटी खावां,वाह रे सांई वाह ।
आसोजां में आसा लागी,हक्कालां री वाह।रात-वासरे रोही रहसां,वाह रे सांई वाह ।
काती महीने करड़ा सिट्टा, मावै जिता खाह,काती महीने सिट्टा कीना,वाह रे सांई वाह ।
मिगसर महीने मौका महता,लेखो लेसी साह,लेयर लेयर दरा होसां,वाह रे सांई वाह ।
पोह महीने पालौ पड़सी,खालड़ी रो खोह,खालड़ी रो खोह कीनो,वाह रे सांई वाह ।
माह महीने पालो पड़सी,पाणी पत्थर साह,पाणी रो तो पत्थर कीनो,वाह रे सांई वाह।
फागण महीने फाग खेलै, गोपियां री नाह,महूड़े रो मद पीयो,वाह रे सांई वाह ।
चैत महीने चम्पा मोरी, चंचल मोरया साहब,बिन बूठां हरिया हुसी,वाह रे सांई वाह ।
बैसाखां में धूप पड़सी, तावड़िये री ताह, पड़छावा में पड़िया रहसां,वाह रे सांई वाह ।
जेठ महीने धूप पड़ेली, तावड़िये री ताह, खेजड़ बढ्ढर खोखा खासां, वाह रे सांई वाह ।

विप्रलंभ

गीत संख्या ४३

अिक थंभियो ढोला । महल चिणाय
च्यारूं दिसा में राखो गोखड़ा जी म्हारा राज ।
गोख गोखे दिवलो संजोय राजिदां ढोला,
दीया रे चानणिये ढालूं ढोलियो ।
बादल बरणी सेज बिछाय,
हाथां से ढोलावुं हूं तो बीजणो जी म्हांरा राज ।
सूतां हंजा मारू सुख भर नींद,
अितने में राइको हेलो मारियो जी म्हांरा राज ।
उठो सुंदर गोरी, दिवलो संजोव,
दीया रे चांनणिये कागद बांचियाजी म्हारा राज ।
लिखियो ओ सुन्दर गोरी, घोड़ो ने सिर पाव,
लिखी है जोधाणो गढरी चाकरी, जी म्हांरी नार ।
मरजो रे राइका थारोड़ी जी नार ।
सैणां रो बिछवो दुसमी पाड़ियो, जीं म्हांरा राज ।
मत दो, सुंदर गोरी राइका ने गाल
राइको राजाजी रे मेल्यो आवियो जी म्हांरी नार ।
पहली ओलूं हंजा मारू सुसराजी ने मेल,
हमके ने उनालो खांतिला घरे बसो, जी म्हांरा राज ।
सुसराजी री सुंदर गोरी जावै रे बलाय,
म्हारे ने सरीसा बेटा घोड़े चढै, जी म्हांरी नार ।
दूजी ओलूं हंजा मारू जेठ जी ने मेल,
हमके जी चौमासो आलीजा घर बसोजी म्हांरा राज ।
जेठजी री कलेहगारी नार नित उठे ने झगड़ो नैतसी,
तीजो ओलूं हंजा मारू । देवरजी ने मेल ।
हमके तो सियाले मद छक्या, घरे बसोजी म्हारा राज,
देवरजी री बालो भोली नार, उमी ने किरलावै ।
कायर मोर ज्यूंजी म्हारी नार,
अितरां में हंजा मारू । थेही रे सपूत ।

नित रातो पधारो जोधाणै री चाकरी म्हांरा राज,
अितरा में सुंदर गोरी म्हे ही अे सपूत ।
नितरा उठे नै जावां जोधाणे री चाकरी, जी म्हांरी नार,
उठो, बाअीसा डागलिये चढ़ जोय ।
कुणजी रे सिधाया, कुणजी घरे वसै, जी म्हांरा राज,
चढ़िया, मावज, म्हारोड़ो बड़ बीर, थानै सुगणी रो सायबो ।
फेली सुंदर गोरी घोड़े री लगाम,
आंसूं तो रलकाया कायर मोर ज्यूं जी म्हांरा राज ।
लीनी हंजा मारू हीवडे लगाय,
आंसूड़ा तो पूंछिया हरिये रूमाल सूं, जी म्हांरा राज ।
देवो नी सुंदर गोरी, हंस हंस सीख,
साअीना सिधाया, छेटी म्हें पड़्या म्हांरी नार ।
सीखड़ली हंजा मारू दीवी रे नहीं जाय,
छाती ने मरीजै, हिवड़ो अूफलै जी म्हांरा राज ।
इक थंबियो ढोला महल चिणाय ।।

गीत संख्या ४४

मारूजी रात में सुपने में बेसर मुख से बोलीजी, ओल्यूं थारी आवे ।
मारूजी, जावो मिल जाइजो, थे बिना मिलग्यां मत जाइजोजी ।
म्हांसू बिना मिल्यां मत जाइजो जी, ओल्यूं थांरी आवै ।
गौरी ये मिलबो बोत, सुहेली बिछड़वो बोत दुहेलो, ओल्यूं थारी आवे ---

गीत संख्या ४५

वाय चाल्या छा, भंवरजी, पीपली जी,
हांजी ढोला हो गयी घेर घुमेर ।।
बैठण री रूत चाल्या चाकरां जी,
ओजी म्हांरी सास सपूती रा पूत ।। मत ना सिधावो पूरब री चाकरी जी
कुण थांरा घुड़ला भंवरजी, कस दिया जी,
हांजी ढोला कुण थाने कस दिया जीण ।। मत ना ----
कुणजी रे हुकमां चाल्यां चाकरी जी,
ओ जी म्हारे हिवड़े रा जीवड़ा ।। मत ना ---

बड़े बीर घुड़ला कस दिया जी गोरी,

हां रे गोरी साथीड़ां कस दिया जीण।।बाबोसा रे हुक्मां चाल्यां चाकरी जी

कदे न लाया भंवरजी सीरणी जी,

हां जी ढोला कदेय न करी मत री वात ।। मत ना ----

कदेय न पूछी मनड़े री वारतां जी,

ओ जी म्हांरी लाल नणद रा ओ बीर ।। थां बिन गोरी ने पलक न आवड़ै जी ।

कदेय न लाया भंवर जी सूतली जी,

हां जी कदेय न बणी नहीं खाट ।। मत ना ----

कदेय न सूतां शामिल सेज में जी,

ओ जी पिया जी अब घर आवो, थारी प्यारी उड़ीकै महल में जी ।।

गीत संख्या ४६

म्हारा राजीड़ा री छिन छिन ओलूं आवै ।

मैं जद जाऊं राम रसोया, साजन री सुध आवै,

कुण जीमै मेरी राम रसोया, कुण मेरो भोजन बखानै ? म्हारा ----

लेय दो घड़ जद पणघट जावूं, साजन री सुध आवै,

कुण मैले म्हारों सोवन कलसो, कुण मोय माथ उठावै । म्हारा -----

जद मैं जाऊं भूरी दुअबा, साजन री सुध आवै,

कुण पकड़ै मेरी बाली पाडी, कुण मोयं दुध दुवायै । म्हारा ----

जद में जाऊं रंग री मेड्यां, साजन री सुध आवै,

कुण बुझै सुख-दुःख री बातां, कुण हंस-हंस बतलावै, म्हारा -----

टप-टप चपकै नैण दीरघड़ा, हिवड़ो भर-भर आवै,

म्हारा राजीड़ा री छिन-छिन ओलूं आवै ।।

गीत संख्या ४७

दोपारां रा आइ रे उबासी, सिंज्यां हाड़ मरोड़िया,

करदेई रे माली डोरो, डोरा सूं जिवड़ो सोरो ।।

वैरो तो सीचे बैठो माली रो, क्यारा तो घेरे बैटी नामण री,

करदेई रे माली --------

अैसी-अैसी अेबां जांणतो, इण पुल में क्यूं नटियो, करदेई रे ----

आ तो किणाजी रे मैलां बादली रे लाल,आ तो फुक-फुक फोला खाय,

कर देई रे -------

रंगीली घण री बादली रे लाल, आ तो भंवरजी मैला बादली रे लाल,

कर देई रे --------

अै तो देवरजी पूछै भावज दूबला रे,लाल बणगा भादरवा री भैंस,

कर देई रे -------

देवर थांरोड़ो वीरा चढ़िया चाकरी रे लाल म्हानै ओलूड़ी आवे ढ़लती
रात रा जी लाल

कर देई रे -------

रंगीली घण री बादली रे लाल,अै तो नणदल बाई पूछै भावज दूबला रे लाल

कर देई रे -------

वामी म्हांरी नवधाणियां रो घेर,बाईसा थारोड़ा वीरोसा चढ़िया चाकरी रे लाल

कर देई रे -------

वांरी मानैतण धान नीं खाय,वा तो खाय खण्डीला दारी खोपरा जी लाल,

कर देई रे -------

अै तो पीवे है भैसंड़ियां रो दूध, मिजाजण घण री बादली रे लाल,

कर देई रे --------

आ तो किणाजी रे मैलां बादली रे लाल, आ तो फुक-फुक फोला खाय,

कर देई रे --------

गीत संख्या ४८

म्हारे बांकड़ली मूंछ्या का सिरदार,
थांकी ओलूंड़ी सतावे ओ राज ।
घुड़लां चढ़ता चतार जो,
म्हाने गैला में कर लिजो याद ।
महलां चढ़ता चतारजो,
म्हाने सैजां पै कर लीजो याद ।
थांकी ओलूं ढ़ोला म्हें करां जी,
म्हांकी करै न कोय ।
ई ओलूं के कारणे जी ढ़ोला,
फर-फर पंजर होई ।

गीत संख्या ४९

केसरिया बालम पधारो म्हारे देस, पधारो म्हारे देस,
आवणा-२ कह गया कर गया कोल अनेक,
गिणता-२ घस गई म्हांरी आंगलियां री रेख
केसरिया बालम - - - - - - -
थारी ओलूं म्है करां, म्हांरी करै न कोय,
दूर-२ पर सहेलियां और मुड़-मुड़ देखे तोय ।
केसरिया बालम --------

गीत संख्या ५०

कदे घर आसीजी, बाईजी थांरो वीरो,
चालों तो बाईजी आपां दोनूं सरवर चालां जी,
घुड़लां ने पाणीड़ो पांवण आवै थारो बीरो
कद घर ---------
चालो तो बाईजी, आपां दोनूं बागां चालांजी,
बागां में सैल करण ने आवै थांरो बीरो ।
कद घर ----------
चालों तो बाईजी आपां, दोन्यूं डेरां चालांजी,
डेरां में घुड़लो चरावण आवै थांरो बीरो,
कद घर आसीजी, बाईजी थांरो वीरो ।।

गीत संख्या ५१

लागे रै भंवरजी ! मेहूड़ा री छींटां, रावली क्यारी रा छाव
पधारो मरवण रा रसिया, मैलां जोऊं वाटड़ली
नैणां में रावली ओलूंणो वसाय, हिया में दरसण रो उमाव
पधारो पदमण रा कंता, मैला जोऊं वाटड़ली
सिघाया कांइ रै मेघां ने, इन्दराणी हो राज
रम गया मारगां में अच्छर साथ, पधारो गीरा रा हेतालु
ऊभी जोऊं - वाटड़ली
सटीरे मोरीया ले जाये सदेश
गोरी तड़पे मैल में, पीयू बसे परदेस
पधारो घणा हेतालु साहिबा ऊभी जोऊं वाटड़ली ।

गीत संख्या ५२

सावण तो लागो पिया, भादवो जी,
कांई बरसण लागो मेह ।
अब घर आयजा गोरी रा बालम हो जी ।।
छपर पुराना पिया पड़ गया रे,
कोई तिड़कण लाग्या बोदा बांस ।
अब घर आयजा फूल गुलाब रा हो जी ।।
बादल में चमके पिया बिजली रे,
कांई महलां में डर, महलां में डरपै घर री नार,
अब घर आयजा, बरसा रुत मली हो जी ।।
एक तो अंधियारी ढ़ोला ओरड़ी रे,
दूजी हो अंध्यारी, जी रात,
अब घर ---------- ।।
गोरी तो भीजे, ढ़ोला गोखड़े जी,
कांई आलिजो भीजे फोजा मांय,
अब घर आयजा बरसालू बादला हो जी ।।
कुओं तो हुवे ढ़ोला, डाक लूंगी,
कोई समन्दर डाकयो ना जाय,
अब घर आयजा, फूल गुलाब रा होजी ।।
कागद हुवै तो ढ़ोला, बांच लूं जी,
करम न बांच्यो ना जाय,
अब घर ---------- ।।

गीत संख्या ५३

बादली बरसे क्यूंनी ए, बादली चमके क्यूं नी ए
म्हारा भंवर सा रा हवा महल में चम्पो सूखे ए
चांदा थारे चांदणे जी कंई सूती पलंग बिछाय
जद जागूं जद एकली जी कंई मूं कटारी खाय ।
बादली ----------
गोरी ऊबी गोखड़े जी कांई गज गज लांबा केस
हाय बसंती केवड़ो जी कांई, करे भंवर सूं हेत । बादली ------

सजन पोंहावा, म्हें गई जी कई ऊभी मारग बीच
नैना चाल्या धारवां जी म्हारे मचग्यो कीच ।

बादली ---------

गीत संख्या ५४

बदली ए मेरो चांद छिपायो
उठ उठ बादली म्हारे घर आयी है बादली,
कुण म्हारो घर ए बतायो
दिखण दिसासूं आ उठी रे बादली, ए तो ढूंढत ढूंढत घर पायो । बदली ---
रतनागर सूं नीर ज भरियो, थारे घर बरसबा ने घेरो ए लायो ।
घहर घुमेर ऊमड़ी बादली थारो चांद ओट में आयो । बदली -------

गीत संख्या ५५

रूत आई रे पपइया, तेरे बोलण की रूत आई रे
जेठ मास की लूवां रे वीती अब सुरंगी रूत आयी
असाढ़ उतरियो रे सावण आयो, काली काली घटा उमड़ आयी । रूत ---
कदेयक झोला चले सूरियो, धीमी धीमी पुरवाई । रूत---
मोठ बाजरी सूं खेत लहरके, वण-वण हरियाली छाई । रूत ---
झिर-मिर झिरमिर मेहूड़ो बरसे, स्याम बादली घिर आयी । रूत ----
बचपन बीत्यो जोबन उमरियो, बार-बार अंगड़ाई रे । रूत ----
सूना लागे महल मालिया, बिन प्रियतम घबराई रे । रूत ----
रेशम तकियो गादी बिन, मारू दु:दायी रे । रूत -----

गीत संख्या ५६

पपइया, तूं बोलरे जित म्हांरे आलीजे भंवर रो मुकाम
सावण आयो सायबा वने झिंगोरत मोर
कालिंड़ा कू-कू करे, म्हारे, करत कोयलड़ी सोर । पपइया ----
सावण आयो सायबा, बेला फुट रही वाड़
चातक झुर रह्यो मेघ ने, पिव ने झुर रही नार । पपइया -----
सावण आयो सायबा, कहो य तो पीवर जाय
पग-पग पाणी पालशे, वारलिया री छांव । पपइया --------

गीत संख्या ५७

मेरो मन मारूजी मिलवा ने

जेठ असाढ़ आसा हूं काढ्या, तो सावण आयो झूरबा । मेरो ---

पहलो पख सावण को लाग्यो, तो लाग्यो मदावुड़ो उड़बाने

मेरो मन मारूजी मिलवाने

पूरब दिसा हूं उठी वादली, तो आयी म्हांरे घरां वरसण ने । मेरो ---

नान्ही नान्ही बूंदा मेवड़ो बरसे, तो लागी वादली गरजबा ने । मेरो ---

लिख पखाणू म्हांरे मारूजी ने देस्यां, तो एक बार आवो पिया मिलवा ने

मेरो मन मारूजी हूं मिलवा ने ।

गीत संख्या ५८

म्हारे घरे नही मरतार, पपैया बैरीना बोलो

पपैया बोले वाणी, म्हारे नैनां बरसे पाणी

म्हे ऊबी जोऊं बाट । पपैया ---

पपैया तो पकड़ मंगाऊं, पिंजरा में रोकाऊं

म्हे बैठी बैठी रही गम खाय । पपैया ---

सात बरस रो परण्यो साजन

बीस बरस नी आयो

म्हें पीली पड़ी दिन रात । पपैया ------

गीत संख्या ५९

ओ म्हारी जोड़ी रा ओ मिरगानैणी रा

रतन सियालो राजन यूं ही गिया जी

उनाला रा चार मीना, चौमासा रा चार मीना,

सियाला रा लागै थोड़ा थोड़ा म्हारी जोड़ी रा । रतन -----

उनाला रा बापरे, चौमासा रा मामा रे

सियाला रा माने लेई वालो जोड़ी रा । रतन -------

उनालो फेर आवेलो, चौमासो फेर आवेलो,

सियालो फेर आवेला, गयोड़ो जोबन नही पाछे आवेलो । म्हारी जोड़ीरा रतन ।

रतन ----------

गीत संख्या ६०

जाड़ो तो पड़े जी बाई सा म्हारा डूंगरां
मार्‌या - मार्‌या दादर मोर
किस विध भुगतां, जी नणद बाई, जाड़े नै

जाड़ो तो पड़ियो जी नणद बाई डहरां में
मार्‌या मार्‌या हिरण - पवास । किस विध ------
जाड़ो तो पड़ियो जी नणद बाई, महलां में
मारी-मारी परदेस्यां री नार । किस विध -------

गीत संख्या ६१

जी सायब होली तो करी है परदेश,
गणगोर्‌यां आज्यो म्हारा राजवी ।
जी सायब हाथों रो चुड़लो चिराय,
जी सायब, सिर पर स्यालू मोलाय,
गोटो तो फेरूं मंहगा मोल को ।।

गीत संख्या ६२

तीण सुण्यां घर आव,
मंगल आपरी नौकरी म्हारा राज ।
तीज सुण्या ---------- ।।
कुण दिसा आपरी नौकरी जी महाराज,
कुण दिसा नालू वाट ।
तीज सुण्या ---------- ।।
उगेणी (पूर्व) दिशा आपरी नौकरी जी महाराज,
आथूणी (पश्चिम) दिसा नालू वाट,
तीज सुण्या -------- ।।
पांच रूपीयारी आपरी नौकरी जी महाराज,
लाल मोहर री तीज,
तीज सुण्यां -------- ।।

गीत संख्या ६३

आई रे सावणियां री तीज,
राज यूं कस्यां आऊं ?
बूंद न भीगे म्हारी साढ़ी
बिन पांखों आऊं कियां साजन ?
नही आऊं तो घटे है स्नेह,
राज मूं कस्यां आऊं ?

गीत संख्या ६४ (अ)

आई आई तीज नुहेली, सब सखियां रंग राच्यो,
अेक सखी मेरी पहरी पायल बिछियां रो रमझोल,
दूजी सखी मेरी पहर टाडेरो, पिवजी ने जाय दिखायो,
सब सखियां रंग राच्यो ।।
तीजी सखी मेरी पहर टेवटो, नथली सूं सब संवार्यो,
चौथी सखी मेरी चूनड़ ओढ़ी, गले में मोतीड़ा रो हारो,
और सखी मेरी मेंहदी मांडी, नैणां सुरमो सार्यो,
ओढ़ पहनकर गरब-गुमानण, पीवजी रो मन हरखाओ ।
आई आई तीज नुहेली, सब सखियां रंग राच्यो ।।

गीत संख्या ६४ (ब)

म्हारा सांवलिया सिरदार, थांरी ओल्यूं आवै जी,
सावण सुरंगो आव्योजी, आयी नुहेली तीज,
घर गोरी पीव मालवे जी, किस विध धारू धीज
बादीला ओल्यूं आवेजी ।।
म्हारा सांवलिया सिरदार ---------- ०
और सहेली साथरीजी, कर सोला सिणगार,
फूलो फूलण नीसरी जी, म्हारो बैवे थे कटार,
भंवर थारी ओल्यूं आवे जी ।।
म्हारा सांवलिया सिरदार ---------- ०
नित उठ सरवर न्हावतो, बादलो भरतार,
दांतण करतो वेल को, बै दिन बीत गयां र
म्हांनै ओल्यूं आवे जी ।।
म्हारा चुड़लैरा थे सुहाग थारी ओल्यूं आवे जी ------

सरवर तो सूंघड़ मस्यो, आद सुरंगी पाल
मैं सूखी मैरे पीव बिन, तूं क्यूं सूखी जाल,
साईंना ओल्यू आवेजी ।।
म्हारा सांवलियां सिरदार, साईंना, ओल्यूं आवै जी ।।

गीत संख्या ६५

कांई दसरावा री मुजरी, दीवाल्यां घर री करज्यो जी ढ़ोला,
कांई कांकड़िया पधारिया जी ढोला, कांकड़िया कल बंदाया जी ढ़ोला,
कांई बागां में पधारिया जी ढ़ोला, मालीड़े फूलड़ा बंधाया जी ढ़ोला,
कांई चौवटिये पधारियाजी ढ़ोला, चौरास्यां चंवर ढुलाय जी ढ़ोला,
कांई दरवाजे पधारिया जी ढ़ोला, दरवाजे हस्ती ढुलाय जी ढ़ोला,
कांई मेला में पधारिया जी ढ़ोला, कांई मेलां में मंगल गाया जी ढ़ोला,
कांई दसरावा री मुजरी, गढपतिया राजा आवोजी मेलां,
दीवाल्यां घर री करज्यो जी ढ़ोला ।।

गीत संख्या ६६

सायब ओ जी दिवाल्यां घर री करो,
म्हारा राज, दिवाल्यां घर री करो ।।
लीप्यो पूंछ्यो मैं तो आंगणां जी ढ़ोला,
चौक पुरायो छै, मोतीड़ा री ढ़ोला ।। दिवाल्यां -----
सुरंगो ओढ सू जी ढ़ोला,
थे कसूंबल पाग ओढो जी ढ़ोला ।।
दिवाल्यां घर री करां ।।

गीत संख्या ६७

भादूं बरखा झुक रही, रही घटा नभ जोर,
कोयल कूक सुनावती, बोले दादुर मोर,
एजी सिरदार पपैयो पिव पिव शब्द सुनावे मेरी ज्यान ।
चम चम चमके बिजली, छप टप बरसे मेंह,
मर मांपू विलखत, तजी, भलो निभायो नेह,
जी सरदार चौमासे ने घर मत छोड़ो मेरी जान ।।
आसोजां से सीप ज्यूं प्यारी करती आस,
पीव पीव करती घण फिरे प्रीतम आये ना पास,
जी उमराव इन्द्रजी ओलर ओलर आवे मरी ज्यान ।

करूं चढ़ाई चावसे तेरी दुगी मान,
आसोजां में आय के जो प्रीतम मिल जाय,
जी महारानी थारे सुबरण कब चढ़ाऊं मेरी जान ।।
कातिक काती कर कठी न पिया बसे जा दूर,
लालच के बस होय के बिलखत छोड़ी हूर,
जी उमराव घणा थारी ऊमी काग उड़ावै मेरी ज्यान ।
सखी संजोवे दीवला, पूजे लक्ष्मी मातु
रत्न मिल पोढ़े कामनी ले प्रीतम ने साथ
जी उमराव सखी सब पिय संग, मौज उड़ावै मेरी ज्यान ।।
मगसर महीने में मेरे मन में उठे तरंग,
अरध निशा में आन के यो मदन करे मोहे तंग
जी उमराव थां बिन कुण म्हारी तपत मिटावै मेरी ज्यान ।
ना घर आवे पीवजी, बीत गई बरसात,
अगहन फुरे कामनी, जोड़ो जहर लखात,
जी उमराव अब तो रितु सरदी की आई मेरी ज्यान ।।
पोस जोस सर्दी तना जाड़ो पड़े अनन्त,
दिलवर बसत दिसावशां, बैठ्यां होय निचन्त जी
सरकार सर्दी से जरदी छाई मेरी जान
ठंडी सेज मरपावती, ठंडा बसन तमाम,
पोस भई बेहोस में घर ना सिरका श्याम,
जी सरकार सर्दी में घर आय जाय कंठ लगावो मेरी ज्यान ।।
माघ मगन रहती पड़ा घर होते भरतार,
पिव तो बसे विदेश में हिवड़े बहे कटार ।।

गीत संख्या ६८

सायबा सखा पांणी म्है गई सुणी अनोखी बात घणारा सायबा ओ राज
अेक लुगाई म्हनें यूं कैयो थारै घर बनारी बियांव घणा रा सायब ओ राज
सायबा थारै पीठियां कुण करसी,कुण थारै गासी गीत घणा रा सायब
ओ राज
सायबा तोरण तणकां उटली मांग में लागी लाय घणा रा सायब ओ -
सायबा पैलो फेरो खावियो,लाड़ी री दूखै आंख घणा रा सायबा ओ -
सायबा कांई म्हांने औगण काढ़िया, कांई म्हां में गुण काढ़ घणा रा -

गौरी रा गुण घणा ने औगण थोड़ा, म्हानै दो गोरियां रो कोड़ घण रा ----
सायबा लौडी रोवण म्हें गई म्हारौ हीयौ हिलोलो खाय घण रा ----
घूंघट रोयै रोवणा, म्हारौ हीयौ हीबोला खाय घण रा सायबा ओ राज

गीत संख्या ६९

उड़-उड़ रे उड़-उड़ रे, उड़ उड़ रे म्हारा काला रे कागला
कद म्हारा पिउजी घर आवे, खीर खांड रो जीमण जिमाऊं
सोनारी चोंच मढ़ाऊं म्हारा कागा । जद म्हारा --------
पगल्यां में थारे बांधू रे घूघरा, गला में हार पेराऊं म्हारा कागा । जद म्हारा--
जो तू उड़ने सूण बतावे, थारो जनम-जनम गुण गाऊं म्हारा कागा ।जद म्हारा -

गीत संख्या ७०

नायिका - उड़ ज्या रे काग गिगन का वासी
खबर तो ल्याव म्हारे राजन की
कौआ - नांव नहीं जाणूं मैं तो गांव नहीं जाणूं
सूरत न जाणूं थारे राजन की
नायिका - नांव बतास्यां, गांव बतास्यां
सूरत बतास्यां, म्हारे राजन की
तीखी तीखी नाक, फिरंगी को नौकर
चाल चलै अमरावां की
नायक - उड़ ज्या रे काग गिगन का वासी
खबर तो ल्याव म्हारी गोरी की
कौआ - नांव न जाणूं मैं तो गांव नहीं जाणूं
सूरत न जाणूं थारी गोरी की
नायक - लाम्बा लाम्बा केस, मिरग का सा नेतर
चाल चलै ठकराण्यां की ।

गीत संख्या ७१

उड़ज्या उड़ज्या, हरिये वन रा काग
सदेसो रे ला रे पीव रो
नैण रह्या अकुलाय, उफल आयो म्हारो हिवड़ो
बीत्यो-बीत्यो, सावणिये रो मास, हरियाली री पावस बीतगी
झुर झुर मरूं मैं दिन रैण, पिया रे बिना एकली

मतकर-मतकर बिदरंग थारो भेस

खेले रे केसां न फिरै

आय मिलेगा थारो स्याम दिन दस नै

फुर फुर ना मरै ।

गीत संख्या ७२

तू छै ये कुरजां, मायेली, तू छै धरम री बैण

एक संदेसो ये बाई म्हारी, ले उड़ो

ये म्हारी राज, कुरजां म्हारो पीव मिलादे ये

बी लसकरिये ने जाय कही ये, क्यूं परणी थे मोय

परण पराछित क्यूं लियो ये जी, रह्या क्यों न अकन कंवार

कंवारी ने वर तो घणा छा जी

उड़ी कुरजां ढलती मांझल रात

दिनड़ो उगायो मारूजी रे देस में

बैठ्या पनामारू तलत बिछाय

कागद राल्या भंवरजी री गोद में जी ।

गीत संख्या ७३

आंबे जी बैठी कोयलड़ी, दोय सनद सुणावे जी ।

जाय ढोला जी ने यूं कहिजे, पेली तीज पधारे ।

खरची खदाऊं म्हारा बाप री, पेली तीज पधारे ।

खरची घणी है म्हारी मारूणी, नहीं है, राजाजी री सीख ।

घुड़लो खंदाऊं म्हारा बाप से, पेली तीज पधारे ।

घोड़ला घणा है, म्हारी मारूणी,नहीं दे राजाजी म्हांने सीख ।

आडी तो गोरी ! नदियां फिर रही, बरण हुई है, बनास ।

धीर रा बेटा म्हारा मायेला, वीरा म्हारा ढोलाजी ने पार उतार ।

कांई तो देस्यां रीफ रो, कांई तो देस्यां म्हानें ईनाम,

कड़िया री कटारी देस्यां हो वीरा म्हारा,

सेज चढ्या रो सिर - पांव ।।

गीत संख्या ७४.

सूवटा पीव मिला दे रे, सूवटा मारूजी मिला दे रे
तेरो जलम जलम गुण गास्यूं, सूवा म्हारो भंवर दिखा दे रे
गौरी म्हांने पता बतायो ये, गौरी म्हांने पतो बतायो ये
हां ये थारो बिछड्यो कंट मिलावां, सुगणी म्हाने देस बतायो ये
सूवां बंगाले जाजे रे, सूवा बंगाले जाजे रे
कोई बंगाले रे मांय, भंवर रो पतो लगाजे रे
ल्यावो ल्यावो कोरो कागदियो, सरे, ल्यावो ल्यावो कलम दवात
कोई लिख परवानो म्हारे गल बांधो, उड़ाल्यां परभात
चक्कर खा के सूवटो, सरे, पड्यो धरा के मांय
रामजी गिर्यो धरा के मांय, साथीड़ा तो पाछा हट्या । सरे राजन लियो उठाय
गले में खोल्यो कागदियो, सरे सूवटे खायी उड़ान, राजन देखत रह गया ।
एवड़ छेवड़ ओलमा, सरे बिच-बिच सात सलाम
पढ परवाणू धर नार रो, सरे राजन, भयो उदास
सुणल्यो रे साथ्यां बीनती, स म्हारी मानो सात सलाम
रामजी म्हारी मानो सात सलाम, म्हे जास्यां म्हारे गांव ने सरो म्हारे
धर को काम ।

गीत संख्या ७५

कबूतरी री म्हारे भंवर ने संदेशो दीजे स -
कबूतरी री म्हारा भंवर न मला दीजे री ।
कबूतरी री चूंच प थारे लिखदूं ओलमां
थांरी पास्यां प सात सलाम ------ । कबूतरी री ----
कबूतरी री, मूं तो सूती छी रंग महल री,
आयो मन्ने जाल जंजाल ---------- । कबूतरी री ----
सासूजी थांको जायो सपूत
आयो आयो घरणो म्हारो श्याम । कबूतरी री -------
चालो री बहेड़ियां चालां आपां सरवरिया री पाल
घुड़ले चढ़या पीव आवेला म्हारा राज । कबूतरी री ------

गीत संख्या ७६

उठो हे दासी मर मोतीड़ो रो थाल,
दासी ने धणियारी जोसीजी रे सांचरिया ।।
बताओ जोसीजी म्हारे सपना री बात,
कितरा रे दिनों सू सोढ़ो घरे आवसी ।।
गिणलो म्हारा बाईजी हो पीपल हंदा पान,
इतरा दिनां सूं सोढ़ो घरे आवसी ।।
बालूं तो फांलू पीपल थारा पान,
तूली तो लाऊं पीपल थारा रूख रे ।।
उठो हे दासी मर मोतीड़ा रो थाल,
दासी ने धणियांरी बाईजी रे सांचरिया ।।
बताओ बाईजी मांरे सपना री बात,
कितरा दिनों सू थांरो बीरो आवसी ।।
सजो म्हारा भाभीजी सोलह सिंणगार,
आधी ने अब रातां म्हारो बीरो आवसी ।।
बाईजी रे करसां चन्दनहार, चूड़ो ने बोरंग चून्दड़ी,
सुण सायर सोढ़ा प्रीतड़ली लाई पीले परभात ।।
सुण सायर सोढ़ा सांयघण बिलखे घर आव,
अमराणों लुटीजे घर आव ।।

गीत संख्या ७७

बहू सुनी सेजां में अनवट क्यू पेरिया जी, थारा धणी गया है परदेश ।
बहू को हेरो कुण लेवो जी, थारा रायवर गया है, परदेश ।
लाडू को हेरो कुण लेवे जी, सासू ऊबा तो रीज्यो चान्दण चौक में जी ।
सासू ऊबा तो रीज्यो आंगणे जी, म्हारा रायवर आवेला ढलती रात,
म्हारा कंसूवर आवेला आधी रात, बहू को हेरो खुद लेवे जी ।।

गीत संख्या ७८

काला काला केस मंवर म्हारी आटी कामण गारी रे,
आधी रा अमलां में म्हारी सेज अलूणी है, वैगा वावड़जो ।।
हां म्हारा सासू रा जाया वैगा वावड़जो, म्हारी सेज अलूणी है ।
धोला धोला दांत मंवर, म्हारी चूम्पा कामण गारी रे ।। आधी -----
मोटा मोटा नैण मंवर म्हारी सुरमो कामण गारो रे ।। आधी रा -----
राता-राता हाथ मंवर म्हारी मेंदी कामणगारी रे ।। आधी रा -----

गीत संख्या ७९

थै म्हारे आवजो पांवणा मारूजी, करनै घोड़ा रो घमसांण, म्हारा राज ।।
प्यारी घण उभा अरज करै मारूजी, गढ़पतिया वेगा आवजो म्हारा राज ।।
बागां में डेरा दिरावस्यां मारूजी, अंबै-अंबै घोड़ला बंधावस्या म्हारा राज ।।
बागां में गोठ दिरावस्यां मारूजी, उल्टी दारू री छाक म्हारा राज ।।
घण वारां राजन पीवसी म्हारा राज, दै-दै गला री डोढ़ी आंण म्हारा राज ।
कारी घण ऊभा अरज करै मारूजी, नकसी रो प्यालो घण रै हाथ म्हारा राज ।

थै म्हारे आवजो पांवणा ----------

गीत संख्या ८०

ए जी, मणिहाराजी, साहब जी,
ओ हठीला, ओ बादीला, बांकड़ली मूछ्यां को सिरदार,
ऐ जोऊं रे मनिहारा थारी बाट ।।
ऊंची चढ़ूं रे नीची उतरूं,
नीची रे ललती रे ढ़ोला, म्हांरो टूट्यो नौसरहार
ओ हठीला ---------- ।।

गीत संख्या ८१

महलां में चोरी भंवर हो गयी जी,
कांई लुट्यो अनोखो (ए जी ए) माल
छन्द पछेली गजरा नोगरी जी ।
टीकी फीकी भंवर जी होय गई जी,
कांई हिंगलू रे चढ़या (ए जी ए) सिवाल
अब घर आवो गोरी रा बालमा जी
नरवलगढ़ पर पड़ज्यो बीजली जी,
कोई पड़ज्यो अचूको काल,
ज्यूं डुल जावे गोरी रो सायबो जी ।।

गीत संख्या ८२

अन बिना रहियो अे न जाय,
दूध दह्यां को प्यारी घण पण लियो जी म्हारा राज ।
बिंदली को सरब सुहाग,
काजल टीकी की प्यारी पण पण लियो जी म्हारा राज ।
सोयां बिन रहियो अे न जाय,
हींगलू ढोलिये को प्यारी घण पण लियो जी म्हारा राज ।
नूनणी को सरब सुहाग,
गोटा मिसरू को प्यारी घण पण लियो जी म्हारा राज ।

गीत संख्या ८३

हेलो देवती लांजां मरूं, फालो दियो न जाय,
थां बिन हो म्हंरा साजनां, म्हासूं रह्यो न जाय ।।
क नैणा बस्से सेज पे, सावण बरसे मेह,
होड़ा-होड़ी फड़ लगी, इत सावण उत नेह
हेलो देती ---------- ।।
थांने हिंजरता सांवरा, अतरी गई सुकाय,
आंगलियां री मूंदड़ी, बैंचा चढ़-चढ़ जाय,
हेलो देती लांजा ---------- ।।

गीत संख्या ८४

जलो म्हारी जोड रो उदियापुर मालै रे
वीरो मोली नणद रो म्हांरो हुक्म उठावे रे
म्हे थांने जलोजी, वरजियो उदियापुर मत जाय
उदियापुर रा कामणी राखेला विलमाय
जलो म्हारी जोडरो फोजां रो मांफीरे
वीरो म्हारी नणद रो म्हारो कियो न मानै रे
सांफ पड़ै दिन आथवे, रै केला तेलण लावे तेल
कांई करूं थांरे तेलने म्हारे आलीजे बिना किसो खेल
कैलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर मालै रे
सांफ पडै दिन आथवे, जद खातण लावै खाट
कांई रे करूं थारी खाट ने म्हारे मारूडे बिना किसी ठाट
कैलो म्हांरी जोड़ रो घर नहि आयो रे

सांझ पड़ै दिन आथवै, कैला मालण लावे फूल
कांई करूं रे मालण रा फूल ने हे म्हारी आलीजे बिना लागे सूल
म्हारी जोड़ रो जलो उदियापुर मालै रे
सांझ पड़ै दिन आथवै रे तमोलण लावै पान
कांई करूं रे थारा पान ने हे म्हारे आलीजे बिना किसी आण
जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर मालै रे
मसत महीनो आवियो रे जला अब तो खबर म्हांरी लेय
तो बिन घड़ियन आवडै रे कैला जीवन उतै इत देह
जलो म्हारो जोड़ रो सेजा रो सवादी रे
वीरो म्हारी नणद रो कह्यो न माने रे ।

गीत संख्या ८५

मैं बलिहारी मेरे सायबा की, सपना में सायबा ने देख्या ।
वीरां तणो सिणगार करतो, पिचरंग पगकेसरी बागो ।
कुरंगा देख्यों कबरख तो, तेगो तो म्हें नागो देख्यो ।
भालो तो भल-भल करतो, लीलड़े पर सायब ने देख्यो ।
चोकरे रण में फिरतो, वैरियां रा सिर काटता देख्या ।
तो सायब ने देर सूं लड़तो ।।

गीत संख्या ८६

म्हारो बादीलो चिंतारे, डोढी आवे हिचकी ।
म्हारो कमधजियो चिंतारे, डोढी आवे हिचकी ।।
नैनां कण री बाजरी रे चिड़ियां चुग जाय ।
सासू आपरो डीकरो रे, म्हांसू टलियो ।। डोढ़ी ------
बरजो सासूजी आपरा पूत ने रे, टलियो बागां जाय,
डाल मचोड़े रस पीव रे, फल लाखीणा खाय ।। डोढ़ी -------
कुवा मांयली कटूकड़ी रे, डूबै ने तर जाय,
सासू आपरो डीकरो रे, म्हांसू टलियो जाय । डोढ़ी ------
सासू आपरो डीकरा रे, मांणो ये नट जाय ।। डोढ़ी -------

गीत संख्या ८७

मेला में चींतारे, राजन मार गिये चींतारे,
चालताड़ा हिचकी घड़ी ए घड़ी आए ए ।।
म्हारा सांजन रो जीव दुःख पावे ए,
हिचकी घड़ी ए घड़ी मत आवे ए ।।
बागां में चींतारे, राजन बाबड़ियां चींतारे
हिचकी फूल बिणता दूणी आवे री । म्हारा साजन रो जीव दुख पावे ए---
खेलता चींतारे राजन पासां में चींतारे ए,
हिचकी चौपट खेलता दूणी आवे ए ।। म्हारा साजन -----
मेला में चींतारे राजन् गोरवां में चींतारे ए,
हिचकी मेलां में दूणी आवे री ।। म्हारा साजन ----------
ढोल्यां में चींतारे राजन् सेज्यां में चींतारे ए,
हिचकी पौढ़तणां दूणी आवे री ।
म्हारा साजन रो जीव दुख पावे ए ---------

गीत संख्या ८८

मरवण मांदी ओ

मरवण मांदी ओ
लिख लिख कागदिया मेलूं
जाय कचेड़ियां दीज्यो ओ
थांरी मरवण मांदी ओ
आफूणी रा फुल्ड़ा
गमेजण मांदी ओ
सूतां ने सपनो आवियो राज ।म्हारी -----
हाथ जोड़ ने हाजर ऊभो
तोई नी सीख दिसई राज जी ।म्हारी०
ओ लो राजाजी थांरा पोथी पान तो
म्हांने सीख दिरावो राजाजी ।म्हारी०
ओ लो थांरा हाथी घोड़ा
म्हाने सीख - - - -
कांकड़ आय ने करहा फींखियो
गवालियां ने पूछिया

कांई म्हारी मरवण मांदी ओ
गवालिया बधाई दीनी
राजाजी थांरी मरवण मांदी ओ
बागां आय ने वनमाली ने पूछियो
कांई म्हारी मरवण मांदी ओ
वनमाली बधाई दीनी थांरी मरवण मांदी ओ
गेहूं सरीखी कांब राजाजी
थांरी मरवण मांदी
पिणघट आता ने पणिहारी ने पूछियो कांई
कांई म्हारी मरवण मांदी ओ
पणीहारियां बधाई दीनी
थांरी मरवण मांदी ओ
चोवटिया आता चोधरियां ने पूछियो
कांई म्हारी मरवण मांदी ओ
चोधरियां बधाई दीनी
थांरी मरवण मांदी ओ
काकियां मामियां सगली काते
म्हांरी जोड़ायत नांई दीसे ओ
कांई म्हारी मरवण मांदी ओ
थांरी परणियोड़ी ने नींद घणी आवे
देवर वा महलां में पोढ़ी ओ
खोल मोचड़ियां राजन महलां
मरवण ढोलिये चढ़िया पोढी ओ
घूंघट खोल राजन मुखड़ो जोवियो
मुखड़ा में वालोड़ी कीड़ियां
म्हारी मरवण मरगी रे
म्हारी टाबरिया री माय
जोड़ायत मरगी रे
म्हारी घणा हेतालु नार
म्हारी मरवण मरगी रे

आबो के घर का बालकां
थांरी मावड़ मरगी रे
बागां जाय ने चंदण कटावो
गोरी ने दाग दिरावा
थांरी मावड़ मरगी रे
उर दो मावड़ फोली फंडा
जोगीड़ा बण जाऊं
टाबरिया ने सोरा राखो म्हारी मावड़
मैं तो जोगीड़ो बण जाऊं
म्हांरी मरवण मरगी रे
म्हारे आफूणी रो फूलड़ो
गभेजण मरगई रे
जोगी होय ने जग ढूंढो डोयो
जोड़ायत नी दीखे रे
म्हांरे टाबरियै री मांय
जोड़ायत मरगी रे
म्हांरी मरवण मरगी रे ।

गीत संख्या ८६

मिरगे बिना मिरगी एक लड़ी,
मिरगो छोड़ गयो वन खण्ड मांय मिरगी नै एकलड़ी ।।
मिरगे ने ढूंढ़ण मिरगी नीसरी
ढूंढ्यो-२ वन खण्ड छाण, मिरगे बिना मिरगी एकलड़ी ।।
कठे न लाद्यो जुलमी मिरगलो,
ढूंढ्यां-२ ~~एकक~~-रण-खमाण-मिरगे बिना मिरगी एकलड़ी ।।
ढूंढ़त-२ मिरगी थक गयीं,
बैं के आंख्यां में आंसू गाण, मिरगे बिना मिरगी एकलड़ी ।।
खाय तिरवालो मिरगी ढै पड़ी,
कोई यो दुःख सह्यो न जाय,
मिरगे बिना मिरगी एकलड़ी ।।

गीत संख्या ६०

रात ठंडी चांदनी सेजां पे लेट जाऊं रे,
आलीजा मैं नींदड़ली में थोड़ी सोऊं रे,
कांगज लिख मेलू छैला मोड़ो बेगो आजे,
काजलियो रंगाय घोड़ी म्हारे लाजे रे,
चंग को घमोड़ो मने पाणी भरती सुणायो रे
छोड़ जाऊं रे बेवड़ो, उड़ जाऊं थारी थार चंग धीरो रे -----
चंग को घमोड़ो मन रोटी पोती सुणायो रे,
फोड़ जाऊं रे पांवड़ी उड़ जाऊं, थारी लार, चंग धीरे रे -----
पूत पालणें झोड़ण्यो मने दूध खड़ाया ओट्यो रे
पति क्यू भरमाओ मने दौड़ी आई रे, चंग धीरे रे -------

गीत संख्या ६१

दोय दोय कणियां ले भंवर जी गैर नाबबा चाल्या
घरां थारी परणियोड़ी ओलम्बिया फाड़े रे । धीरे नाच
डाकणियां डकराय राले रे धीरे नाच
दो दोय छोगा राल भंवरजी गैर चाल्या
घरां थारी परणियोड़ी ओलम्बिया फाड़े रे, धीरे नाच ।

गीत संख्या ६२

आगे म्हारो परणियोड़ो तरवरिया नाचे रे
यूं तो पाछी फिरगी रे लाज्यां मरगी रे ।
कड़ियां रे कूंची बांध यूं तो गैर देखबा चाली
एड़ी के ठमोरें म्हारी कूंची गमगी रे कूंची हेरण दो
म्हारी, सासू नणद के छाने आई रे कूंची हेरण दो ।

गीत संख्या ६३

ऊंची चढ़ी ने जोवती, म्हेलां चढ़ी ने देखती
जवांई आया राज जी, नणदोई आया राज ।
बाई म्हारी करो न सिणगार, पोढ़ां म्हेल में
सिणगार करयो न जाय जी आवे म्हाने बाबासी री लाज
आवे म्हांने दादाजी री लाज, आवे म्हांने काकाजी री लाज
आवे म्हांने वीराजी री लाज, छोरी दासी कही न सिरदार
दासी छोरी कहो न उमराव, पोढ़े एकला ।

गीत संख्या ६४

या लजवन्ती गोरड़ी जी, पाणी भरवा जाय
इकी पतली कमर बल खाय ।
देखो मल वल्यां लुल जाय ।।
घूमर खाती जा रही जी, जइयां बन को मोर ।
दोनों पांखं नै फैलाय,
ईं की पतली बल खाय,
घूंघट काढ्यां जा रही जी गुणवंती गणगोर ।
मन में रही बोत सरमाय,
ईं की पतली कमर बल खाय ।
रतन कुवो मुख सांकड़ो जी, सोला सो पणियार,
प्यारी जी सोला सो पणियार ।
छिम छिम कर रही जी, पायल की झणकार ।।

गीत संख्या ६५ (अ)

रूपक - सत सुकरात रो लियो घडूल्यो
प्रेम डोर सूं बांधू
हो पिया हेत डोर सूं जकडूं
माथे मरू सुहाग
कुआ सूं पाणी भर-भर ल्याऊ ।
श्लेष - बागां रा भवरा रे
म्हांरो सगलो रस मद लोभीड़ो
रस मगवांइयो भंवरा रे
लैरी रस ल्याओ थोड़ो थोड़
रस मद लोभी हो
सगरी नगरी आस लगाई हो भवरां
कीकर बाटूं रस मोर
रसमद लोभी हो ।

गीत संख्या ६५ (ब)

दृष्टान्त - पीपल फूरे भंवरजी, फू ने जे
हां ये कोई फल ने फुरै ये फरांस
गोरी बी फूरै अपणै स्याम ने जे
हां जी कोई बिदरंग होय गयो भेस
अब घर आजा, अधेरे घर रा चानणा जी ।
जैं को पीव वसै परदेस
वा घण डरपैं सेजां एकली जी
कै कोई जागे राजा बादस्या
कै कोई बालक की माय
कै कोई जागै तिरिया एकली जी ।।

मानवीकरण- मारग ऊभी खेजड़ी अे, सांगरियां लहराय,
इय मारग ढोलो गयो अे देख्या व्है तो बताय,
खेजड़ली थांनै दूधां सिंचवा चूं अे ।
किसोयक थारो सायबो अे, किण रे वो उणियार,
पांय उबाणो बो ना गयो अे, लीलड़ै पर असवार,
मैनड़ थांनै सांच बतावां अे ।

... ...

दांतण करो कुंवर बावड़ी जी, मल-मल करो असनान,
भंवर थांनै वेग पुगावां जी ।
समस्त संदेश गीत ।

गीत संख्या ६६

धोला धोला कांई करा अे, धोला वन में कपास
धोलो सूरज जी रो घोड़लो अे, धोला बहू रेणादे रा दांत
उगतो उजास वरणो, आथमतो सिंदूर वरणो
गऊं अे चरण चाली, पंछीड़ा मारग चाल्या
नेम धरम सब साथ
सहेल्यां, बाबल घर बाज्या ढोल
सहेल्यां, सुसरेजी घर आणंद उछाव
रातो रातो कांई करोअे, रातो चुडलै री मजीठ

रातो सूरज जी रो घोड़लो अे, राता बहू रैणा दे रा नैण
उगतो उजास वरणो, आथमतो सिंदूर वरणो
गऊ अे चरण चाली, पंछीडा मारग चाल्या
नेम धरम सब साथ
सहेलां बाबल घर बाज्या ढोल
सहेल्यां, सुसरेजी घर आणद उछाव
कालो कालो कांई करा अे, काला वन रा तो काग
कालो सूरज जी रो घोडलो अे, काला बहू रैणा दे रा केस
उगतो उजास वरणो, आथमतो सिंदूर वरणो
गऊ अे चरण चाली पंछीड़ा मारग चाल्या
नेम धरम सब साथ
सहेल्यां, बाबल घर बाज्या ढोल
सहेल्यां, सुसरेजी घर आणद उछाव
पीली पीली कांई करो अे, पीली आ चिणा की री दाल
पीलो सूरजजी रो घोड़लो अे, पीलो बहू रैणादे रो चीर
उगतो उजास बरणो, आथमतो सिंदूर वरणो
गऊ अे चरण चाली, पंछीडा मारग चाल्या
नेम धरम सब साथ
सहेल्यां बाबल घर बाज्या ढोल
सहेल्यां सुसरेजी घर आणंद उछाव
हरियो हरियो काई करा अे, हरी अे वन में तो दूब
हरियो सूरजजी रो घोड़लो, हरी बहू रेणादे री कूख
उगतो उजास वरणो, आथमतो सिंदूर वरणो
गऊ अे चरण चाली, पंछीडा मारग चाल्या
नेम धरम सब साथ
सहेल्यां, बाबल घर बाज्या ढोल

गीत संख्या ६७

मधुवन रोअे आंबो मोरियो ओ तो पसरयो अे सारी मारवाड़ ।

सहेल्यां अे आंबो मोरियो

बहू रिमझिम महलां सूं ऊतरी आ तो कर सोला सिणगार । सहेल्यां०

सासूजी पूछ्यो अे बहू, थारो गहणो म्हांने पहर दिखाव । सहेल्यां०

सासू गहणो नै कांई पूछो गहणो ओ म्हांरो सै परवार । सहेल्यां०

म्हांरा सुसरोजी गढ़रा राजवी सासूजी म्हांरा रतन-भंडार । सहेल्यां०

म्हांरा जेठजी बाजूबंद बांकड़ा जेठाणी म्हांरी बाजूबंद री लूंब । सहेल्यां०

म्हांरो देवर चुड़ली दांत रो देराणी म्हांरी चुड़ले री मजीठ । सहेल्यां०

म्हांरो कंवर धर रो चानणो कुल-बहू अे दिवले री जोत । सहेल्यां०

म्हांरी धीयेज हाथ री मूंदड़ी जंवाई म्हांरे चंपेली रो फूल । सहेल्यां०

म्हांरी नणद कसूमल कांचली नणदोई म्हांरे गजमोत्यां रो हार । सहेल्यां०

म्हांरो सायब सिर रो सेवरो सायबणी म्हें तो सेजां रो सिणगार । सहेल्यां०

म्हें तो वार्‌या, अे बहूजी, थांरा बोल नै लडायो म्हांरो सै परवार । सहेल्यां०

म्हें तो वार्‌याजी,सासूजी,थांरी कोख नै थे तो जाया अरजण-भीम । सहेल्यां०

गीत संख्या ६८

म्हारा रतन राणा, अेकर तो अमराणे घोड़ी फेर ।

अमराणे में बोलै सूवा-मोर, हो जी हो,म्हारा रतन राणा,

अमराणे में बोलै सूवा-मोर, बागां में बोलै छै काली कोयली,

रै म्हारा सायर सोढ़ा, अेकर सू अमराणे घोड़ी घेर ।

अमराणे में महूड़े रो पेड़,

हो जी हो, म्हारा रतन राणा, अमराणे में महूड़े रो पेड़ ।

महूड़ां मांही सूं मद नीसरै,

हो म्हारा, रतन राणा, अेकर सूं अमराणे पाछो आव ।

अमराणे में घरट मंडाय,

हो जी हो, म्हारा रतन राणा, घर-घरिये में घरट मंडाय ।

गेहूंड़ा पीसीजै, आटड्यो राणे रावरो,

रै म्हारा सायर सोढ़ा, अेकर तो अमराणे घोड़ी फेर ।

अमराणे में घड़ै रै सोनार,

हो जी हो, म्हारा रतन राणा, अमराणे में घड़ै रै सोनार ।

पायलड़ी घड़ा दे रिमझिम बाजणी,

रै म्हारा रतन राणा, अेकरिये अमराणे पाछो आव ।

मटियल ऊभी, छाजइये री छांह,
हो जी हो, म्हारा रतन राणा, मटियल ऊभी, छाजइये री छांह ।
आंसूड़ा ढ़लकावै कायर मोर ज्यूं,
रै म्हारा रतन राणा, अेकर तो अमराणे घोड़ी फेर ।
अमराणे में घोर अंधार,
हां रै म्हारा सोढ़ा राणा, अमराणे में घोर अंधार ।
बिलखानै लागै महल-मालिया,
हो म्हारा रतन राणा, अेकरिये अमराणे पाछो आव ।

गीत संख्या ९९

नहीं मानूं म्हारा स्याम थारी बावड़ली, नहीं मानूं जी ।
अेक दिन बोल्यो ढोलो स्यालूड़ों मंगादु
दूजे दिन मे मरी अे न दामलड़ी, नहीं मानूं जी । नहीं मानूं० ।
अेक दिन बोल्यों ढोलो पीयर खिनादु,
दूजे दिन मरीय न दामलड़ी, नहीं मानूं जी । नहीं मानूं०
दिन की सांफल सांफ की दिनगी
कदेय न बोल्यो ढोलों सांवड़ली, नहीं मानूं जी । नहीं मानूं०

गीत संख्या १००

ऊंचा राणाजी रा गोखड़ा रे,
नीचे पीछोला री पाल
पटेल्या मालवी रे
मार्‌यो जाइला रे
मार्‌यो तो जाइला माल में रे
खेती रो धन्धों ढाब पटेल्या, मालवी रे
मार्‌यो जाइला रे
चोरां री बैठक छोड़ पटेल्या मालवी रे
मार्‌यो जाइला रे

गीत संख्या १०१

म्हारी घूमर है नखराली अे माय
घूमर रमती ने कांजल टीकी लादी अे माय
घूमर रमता म्हे जासां

म्हानै रमती नै लाडूडा लादो अे माय
म्हानै सिसोदिया री सीस गुथावै अे माय
म्हानै देवड़ा रै घरे मत दीजो अे माय
म्हानै राठौड़ा रै घर मल दीजो अे माय
म्हानै राठौड़ा री रीत सुहाये अे माय
म्हारी घूमर है नखराली अे माय
घूमर रमता म्हें जासां ।

गीत संख्या १०२

म्हारी बालक बनड़ी जी ओ राज दादीजी सूं अरज करै ।
दादीजी उण घर दीज्यो ओ राज पोती थांरी राज करै ।
गिदरा री खूंदण वाली ओ राज कचोलै दूध पीवै ।
फरोखां री झांखण बाली ओ राज दासी ऊभी चंवर करै ।
(फिर दादीजी के स्थान पर नानीजी,मामीजी,माताजी,मासीजी,काकीजी,
भोजाईजी आदि नाम ले लेकर गीत आगे बढ़ता है।)

गीत संख्या १०३

दल बादल बीच चमके जी तारा, सांझ समै, पीव लागे जी प्यारा,
कांअीरे जबाब करूं, रसियां, जवाब करूं ली, जबाब करूंली,
आलीजे री सेजां में रीझ रहूंली, कांअी रे मिजाज करूं, रसिया ।।१।।
माथा रो रस मैहमंद लीयो, मैहमंद रो रस राजिंद लीयो,
कांअी रे गुमान करूं, रसिया, कांअीं रे मिजाज करूं, रसिया,
हां रे मदकक्किया री सेजां में रीझ रहूंली, कांअी रे जबाब करूं रसिया ।।२।।

गीत संख्या १०४

बाय चाल्या का मंवर जी ! पीपलीजी, हांजी ढोला ! हो गई घेर घुमर ।
बैठण की रूत चाल्या चाकरी जी । अे जी म्हांरी सास सपूती रा पूत ।
मत ना सिधारो पूरब री चाकरी जी ।।१।।
परण चाल्या का मंवरजी ! गोरड़ीजी,हांजी ढोला ! हो गई जोध जवान ।
बिलसण की रूत चाल्या चाकरजी,अे जी म्हारा लाल नणद रा ओ वीर ।
मत ना सिधारो पुरब री चाकरी जी ।।२।।

कूण थारा घुड़ला मंवरजी ! कस दिया जी, हांजी ढोला ! कुंण थाने कस दिया जीण
कुण्याजी रा हुक्मा चाल्या चाकरी जी, ओ जी म्हारे हीवड़े रा जीवड़ा ।
मत ना सिधारो पुरब री चाकरी जी ।।३।।
बड़े बीरे घुड़ला गोरी ! कस दिया जी,हां ऐ गोरी ! साथीड़ा कस दिया जीण ।
मामोसा रा हुक्मा चाल्या चाकरी जी ।।४।।
रोक रूपैयो मंवरजी मैं बणूंजी, हांजी ढोला ! बण ज्याऊं पीली पीली मोहर ।
मीड़ पड़ै जद मंवरजी ! बरत ल्यो जी,ओ जी म्हारी सेजां रा सिणगार ।
पियाजी ! प्यारी ने सागे ले चालो जी ।।५।।
कदे न ल्याजा मंवरजी ! सीरणी जी, हां जी ढोला ! कदे न करी मनुवार ।
कदेय न पूछी मनड़ेरी वारता जी, ओ जी म्हारी लाल नणद रा ओ वीर ।
थां बिन गोरी ने पलक न आवडे जी ।।६।।
कदे न ल्याजा मंवरजी ! सूतली जी,हांजी ढोला ! कदे भी बुणी नहीं खाट ।
कदेय न सूतां रलमिल सेज में जी, ओ जी पियाजी ! अब घर आओ,
थारी प्यारी उड़ीके महल में जी ।।७।।
थारे मामोसा ने चाये मंवरजी धन धणोजी,हांजी ढोला ! कपडे री लोभण थारी माय
सेजा री लोभण उड़ीके गोरड़ी जी, थारी गोरी उड़ावे काग ।
अब घर आओ जी धाई थारी नोकरी ।।८।।
अब के तो ल्यावां गोरी ! सीरणी ये, हां ये गोरी ! अब करस्यां मनुवार ।
घर आया पूछां मनड़े री बारता जी, अब के ल्यावां गोरी सूतली जी,
हां ए गोरी ! आए बुणागा खाट,पीछे सोस्यां रलमिल थारी सेज में जी ।।९।।
चरखो तो ले ल्यूं मंवरजी ! रांगलो जी,हांजी ढोला ! पीढ़ो लाल गुलाल ।
तकबो तो ले ल्यूं जी मंवरजी ! बीजलसार को जा,ओजी म्हारी जोड़ी रा भरतार ।
पूणी मंगाल्यूं जी बीकानेर की जी ।।१०।।
म्होर म्होर की कातूं मंवरजी ! कूकड़ी जी, हांजी ढोला ! रोक रूपैये रो तार ।
मैं कातूं थे बैठा बिणाज ल्यो जी,ओ जी म्हारी लाल नणद रा ओ वीर ।
जल्दी घर आओ प्यारी ने पलक न आवड़े जी ।।११।।
गोरी री कुमारी खासी रांडिया रे,हां ये गोरी ! के गांधी के मणियार ।
म्हें छा बेटा साहूकार रा जी, ए जी म्हारी धणीये पियारी नार,
गोरी री कमाई से पूरा ना पड़े जी ।।१२।।
सांवण खेती मंवरजी ! थे करी जे, हांजी ढोला ! मादुड़े करयो जी नीनाण ।
सीटां री रूत छाया मंवरजी ! परदेस में जी, ओजी म्हारा धणा कमाऊ उमराव ।
थारी पियारी ने पलक न आवड़े जी ।।१३।।